भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान

ICFRE-HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

(*Indian Council of Forestry Research & Education*)

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय)

(An Autonomous Body of the Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India)

क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन–2026

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (HFRI), शिमला द्वारा भा.वा.अ.शि.प.-वन अनुसंधान संस्थान (FRI), देहरादून के सहयोग से **"विकसित भारत@2047 के लिए उत्पादकता संवर्धन हेतु वृक्ष सुधार की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ"** विषय पर **क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन (RRC)-2026** का आयोजन 21 अगस्त 2026 को भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान**,** शिमला के सम्मेलन कक्ष में हाइब्रिड मोड द्वारा किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य वन उत्पादकता में वृद्धि तथा विकसित भारत@2047 के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए वृक्ष सुधार, आनुवंशिक संसाधनों एवं गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर विचार-विमर्श करना था। उत्तर भारत के विभिन्न वन विभागों के अधिकारियों, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के प्रतिनिधियों, सहयोगी संस्थाओं के निदेशकों एवं वैज्ञानिकों, विभिन्न हितधारकों, तथा विभिन्न अनुसंधान एवं शैक्षणिक संस्थानों के वैज्ञानिकों और प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

सम्मेलन के प्रारंभ में, **डॉ. मनीषा थपलियाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला** ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि नाजुक हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र वर्तमान में विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वृक्षों की संख्या एवं हरित आवरण में वृद्धि के साथ-साथ अधिक व्यावहारिक एवं प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पारिस्थितिक सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के प्रति बेहतर अनुकूलन क्षमता गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादकता में सुधार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उभरती पर्यावरणीय एवं वानिकी चुनौतियों की पहचान तथा उनके प्रभावी समाधान के लिए विभिन्न अनुसंधान संस्थानों एवं संबंधित संगठनों को आपसी समन्वय एवं सहयोग के साथ कार्य करना चाहिए।

सह-आयोजक संस्थान की ओर से, **श्रीमती ऋचा मिश्रा, भा.व.से., निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून** ने वृक्ष सुधार और वन आनुवंशिक संसाधन के क्षेत्र में वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा किए जा रहे शोध कार्यक्रमों के बारे में बताया। इसके अलावा उन्होने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादकता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक एवं दीर्घकालिक दृष्टिकोण आवश्यक है। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान संस्थानों एवं संबंधित संगठनों के बीच मजबूत समन्वय एवं सहयोग स्थापित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पारंपरिक विधियों के स्थान पर आधुनिक एवं उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाया जाना चाहिए तथा अनुसंधान के व्यावहारिक एवं प्रभावी परिणाम सुनिश्चित करने के लिए अधिकाधिक परिणामोन्मुखी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

डॉ. सुधीर कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने अपने संबोधन में कहा कि विश्व के वनों की तुलना में भारतीय वनों की उत्पादकता बहुत कम है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित लक्ष्यों/योगदानों, सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति तथा देश के वन आवरण में वृद्धि के दृष्टिगत RRC के विषय/थीम का चयन अत्यंत उपयुक्त किया गया है। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री एवं वृक्ष सुधार के क्षेत्र में क्षेत्र-विशिष्ट अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया तथा इस दिशा में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला व वन अनुसंधान संस्थान, देहारादून द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्य का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने यह भी कहा कि अनुसंधान एवं विस्तार कार्य साथ-साथ चलने चाहिए तथा अनुसंधान के निष्कर्षों/परिणामों को अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पहुँचाया जाना चाहिए। साथ ही, हितधारकों के सुझावों को वानिकी सुरक्षा एवं सतत विकास के लिए उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

डॉ. एच. एस. गिनवाल, उप महानिदेशक (अनुसंधान), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का परिचय देते हुए कहा कि क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन मुख्य रूप से हितधारक-केंद्रित मंच है, जिसका उद्देश्य उभरती हुई चुनौतियों पर चर्चा करना तथा अनुसंधान एवं अंतिम उपयोगकर्ताओं के बीच संबंध को मजबूत करना है।उन्होंने कहा कि वर्तमान संदर्भ में वनों का केवल संरक्षण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जैवभार (Biomass) की दृष्टि से उनकी उत्पादकता में भी वृद्धि की जानी चाहिए। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि वृक्ष सुधार गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री में सुधार करने तथा वन उत्पादकता बढ़ाने का एक प्रभावी साधन है।उन्होंने सुझाव दिया कि वृक्ष सुधार संबंधी अनुसंधान को क्षेत्र-आधारित समस्याओं पर केंद्रित किया जाना चाहिए तथा सूखा-सहिष्णु प्रजातियों, संसाधन उपयोग दक्षता, गुणवत्ता आश्वासन, कृषि भूमि की उत्पादकता में वृद्धि, लकड़ी की सुरक्षा तथा हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

डॉ. संजय सूद, भा.व.से., **PCCF एवं HoFF, हिमाचल प्रदेश वन विभाग, शिमला** ने सम्मेलन में **विशिष्ट अतिथि** के रूप में भाग लिया। उन्होंने वृक्ष सुधार के क्षेत्र में विद्यमान विभिन्न चुनौतियों तथा उनसे निपटने के संभावित उपायों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने पारिस्थितिक सुरक्षा एवं आजीविका संवर्धन पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि वन उत्पादकता में वृद्धि के लिए जैव विविधता एवं आनुवंशिक विविधता का संरक्षण तथा संवर्धन महत्वपूर्ण पहलू हैं, जिन पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने पारंपरिक एवं स्थानीय प्रजातियों के अधिकाधिक रोपण तथा ऐसी वृक्ष प्रजातियों को बढ़ावा देने पर बल दिया, जो पारिस्थितिक रूप से अधिक स्थिर एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल हों।

सम्मेलन की **मुख्य अतिथि श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (ICFRE), देहरादून** ने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि वृक्ष सुधार के प्रयासों का मुख्य उद्देश्य अधिक लचीली, टिकाऊ एवं भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप वन प्रणालियों का विकास करना है। उन्होंने आनुवंशिक सुधार के लिए जीनोटाइप तथा पर्यावरण के बीच संबंधों को समझने, हिमालयी प्रजातियों के जनसंख्या-स्तरीय अध्ययन, वन उत्पादकता में वृद्धि तथा अनुसंधान एवं विस्तार के बीच की दूरी को पाटने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया। उन्होंने जलवायु-लचीली प्रौद्योगिकियों के विकास एवं उपयोग, दीर्घकालिक वृक्ष प्रजनन कार्यक्रमों के संचालन, अनुसंधान एवं वानिकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित उपकरणों के समावेशन, उद्योगों के साथ मजबूत साझेदारी तथा विभिन्न संस्थानों के बीच प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके अलावा उन्होंने कहा कि नाजुक हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के समक्ष उत्पन्न विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों, विभिन्न संगठनों एवं गैर-सरकारी संगठनों की सक्रिय एवं प्रभावी भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। उन्होंने पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादकता बढ़ाने के लिए **CAMPA, "एक पेड़ माँ के नाम" तथा मिशन LiFE** जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से हरित आवरण में वृद्धि पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान द्वारा **चार महत्वपूर्ण प्रकाशनों का विमोचन** किया गया। इनमें "Operational Management Plan of Seed Production Area of *Acacia catechu*, *Quercus leucotrichophora*,

Betula utilis तथा "हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती" शामिल हैं। इन प्रकाशनों का विमोचन मुख्य अतिथि **श्रीमती कंचन देवी, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून** ने (वर्चुअल माध्यम से) किया।

तकनीकी विचार-विमर्श दो सत्रों में आयोजित किया गया। **तकनीकी सत्र-I** "**उत्पादकता वृद्धि के लिए वृक्ष सुधार, आनुवंशिक संसाधन एवं गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री"** पर आधारित था । इस सत्र में भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान**,** शिमला के अनुसंधान प्रयासों, पश्चिमी हिमालय में वन वृक्षों की रोपण सामग्री में सुधार, वृक्ष सुधार एवं आनुवंशिक संसाधनों में प्रगति, वन आनुवंशिक संसाधनों के सुधार, संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु जैव-प्रौद्योगिकीय एवं वैज्ञानिक तथा वृक्ष सुधार की भविष्य की संभावनाओं पर प्रस्तुतियाँ एवं विचार-विमर्श किया गया। हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड के वन विभागों द्वारा वन अनुसंधान से संबंधित विषयों पर प्रस्तुतियाँ एवं चर्चा भी सत्र का हिस्सा रही। डॉ. मोहम्मद इब्राहिम, वैज्ञानिक-ई एवं प्रमुख, आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार, भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने "पश्चिमी हिमालय में रोपण सामग्री का सुधार: हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की पहल, अनुभव एवं भविष्य की दिशाएँ" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. मनीष सिंह भंडारी, प्रमुख, आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने "सतत उत्पादकता के लिए वृक्ष सुधार एवं आनुवंशिक संसाधनों में प्रगति" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. राजेंद्र कुमार मीणा, वैज्ञानिक-ई, आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने "वन आनुवंशिक संसाधनों के सुधार, संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए जैव-प्रौद्योगिकीय एवं फिजिओलोजीकल हस्तक्षेप" विषय पर प्रस्तुति दी। प्रो. संजय खजूरिया, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, सांबा ने "विकसित भारत के लिए उत्पादकता वृद्धि हेतु वृक्ष सुधार की भविष्य की संभावनाएँ" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. विनय भार्गव, भा.व.से., अरण्यपाल अनुसंधान, उत्तराखंड ने "भावी पीढ़ियों के लिए जलवायु-सहिष्णु वृक्षारोपण: उत्तराखंड के मुद्दे एवं चुनौतियाँ" विषय पर प्रस्तुति दी। श्री सुरिंदर चंदेल, प्रभागीय वन अधिकारी (DFO), सुंदरनगर, हिमाचल प्रदेश ने वानिकी अनुसंधान पर एक प्रस्तुति दी।

तकनीकी सत्र-II का विषय **"जलवायु अनुकूलन, कृषि उत्पादकता एवं सतत आजीविका के लिए वृक्ष सुधार"** पर केंद्रित था। इस सत्र में वानिकी, बागवानी, कृषि विश्वविद्यालयों एवं उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय वृक्षों की गुणवत्ता एवं उत्पादकता में सुधार, बहुउद्देशीय वृक्षों का आनुवंशिक सुधार, क्लोनल वानिकी, जलवायु-अनुकूल वृक्ष सुधार हेतु हिमालयी आनुवंशिक विविधता, जम्मू के उपोष्ण क्षेत्रों में वृक्ष सुधार तथा क्षरित भूमि के पुनर्वास में कृषि-वनीकरण आधारित उपायों पर विचार-विमर्श किया। जम्मू एवं कश्मीर वन विभाग से संबंधित वन अनुसंधान विषयों पर भी चर्चा की गई। डॉ. कमल शर्मा, सेवानिवृत्त डीन, कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री, नेरी, हमीरपुर ने "हिमाचल प्रदेश में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय वृक्षों की फल गुणवत्ता एवं उत्पादकता में वृद्धि" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. अशोक कुमार धाकड़, वैज्ञानिक, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने "उत्तर-पश्चिमी भारत में कृषि भूमि की उत्पादकता बढ़ाने के लिए बहुउद्देशीय वृक्षों का आनुवंशिक सुधार" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट–कमर्शियल, Kuantum Papers Ltd., होशियारपुर, पंजाब ने "क्लोनल वानिकी के माध्यम से वृक्ष सुधार: उत्पादकता वृद्धि एवं सतत औद्योगिक लकड़ी सुरक्षा का प्रमुख साधन" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. जयपाल, प्रमुख, वृक्ष सुधार एवं आनुवंशिक संसाधन विभाग, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन ने "जलवायु-सहिष्णु वृक्ष सुधार के लिए हिमालयी आनुवंशिक विविधता का उपयोग" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. पुनीत चौधरी, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, जम्मू, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (SKUAST), जम्मू ने "जम्मू के उपोष्ण क्षेत्रों में उत्पादकता वृद्धि के लिए वृक्ष सुधार की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ" विषय पर प्रस्तुति दी। प्रो. जी. एम. भट्ट, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, कुपवाड़ा, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (SKUAST), श्रीनगर ने "कृषि वानिकी: क्षरित भूमि के पुनर्वास के लिए एक व्यवहार्य विकल्प—पश्चिमी हिमालय का एक अध्ययन" विषय पर प्रस्तुति दी।

सम्मेलन का समापन चर्चा एवं मसौदा सिफारिशों की प्रस्तुति के साथ हुआ। अंत में **डॉ. अश्विनी तपवाल,** समूह समन्वयक (अनुसंधान), भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने सभी प्रतिभागियों, विशेषज्ञों एवं आयोजन से जुड़े सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान

ICFRE-HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

(*Indian Council of Forestry Research & Education*)

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय)

(An Autonomous Body of the Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India)

REGIONAL RESEARCH CONFERENCE [RRC]-2026

ICFRE-Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla, in collaboration with ICFRE-Forest Research Institute (FRI), Dehradun, organized a **Regional Research Conference (RRC)-2026** on **"Current Status, Challenges and Future Prospects of Tree Improvement for Productivity Enhancement for Viksit Bharat @ 2047"** on 21 August 2026 at the Conference Hall of ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla, in hybrid mode. The conference aimed to deliberate on the current status, challenges and future prospects of tree improvement, genetic resources and quality planting material for enhancing forest productivity and realizing the vision of **Viksit Bharat @ 2047**. Officials from various Forest Departments of North India, representatives of Non-Governmental Organizations (NGOs), Directors and Scientists of Sister Organization, various stakeholders, Scientists and representatives from different research and academic institutions participated in the programme.

At the outset of Conference, **Dr. Manisha Thapliyal, Director, ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla** welcomed all dignitaries and guests. She stated that the fragile Himalayan ecosystem is currently facing several challenges. Addressing these challenges requires increasing tree population and green cover along with the development of more practical and effective strategies. She emphasized that ecological security and enhanced resilience to climate change are crucial for improving ecosystem productivity through Quality Planting Material. She stressed that various research institutions and concerned organizations should work in coordination and collaboration to identify emerging environmental and forestry challenges and develop effective solutions.

From Co-organising institute, **Smt. Richa Misra, IFS, Director, ICFRE-Forest Research Institute, Dehradun** highlighted the research programmes being undertaken by the Forest Research Institute, Dehradun, in the field of **tree improvement and forest genetic resources**. She further stated that a scientific and long-term vision is essential for enhancing ecosystem productivity. She emphasized the need for strong coordination and collaboration among various research institutions and concerned organizations. She also stressed the adoption of modern and advanced technologies in place of conventional methods and the organization of more outcome-oriented programmes to ensure practical and effective research outcomes.

Dr. Sudhir Kumar, Deputy Director General (Extension), ICFRE, Dehradun in his address said that productivity of Indian forests is very low in comparison to world forests and topic/theme of RRC has been aptly selected in view of the nationally determined targets/contributions for achieving millennium SDGs and increasing forest cover of the country. He underscored the importance of region specific research in the field of quality Planting Stock/Tree Improvement and specifically mentioned about the praiseworthy work of HFRI and FRI in this area. He also opined that research and extension should go together and findings/outcomes should be shared to end users and suggestions of stakeholders should be considered for forestry security and sustainable development.

Dr. H.S. Ginwal, Deputy Director General (Research), ICFRE, Dehradun gave introduction about RRC and said that RRC is mainly stakeholders centric platform to discuss the emerging challenges and strengthen link between Research and end-users. He told that in present context, forests are not only to be conserved but should be more productive in terms of biomass. He strongly affirmed that tree improvement is a powerful tool to improve planting stock and enhance productivity of forests. He suggested that tree improvement research should focus field based problems and target drought tolerant species, resource use efficiency, quality assurance and increase farmland productivity, achieve wood security and green economy.

Dr. Sanjay Sood, IFS, PCCF & HoFF, Himachal Pradesh Forest Department, Shimla, participated as the Guest of Honour in the conference. He elaborated on the various challenges in the field of tree improvement and possible approaches to address them. He emphasized ecological security and livelihood enhancement. He stated that conservation and enhancement of biodiversity and genetic diversity are important aspects that require greater attention for increasing forest productivity. He also stressed the need to promote the plantation of traditional and indigenous species, particularly tree species that are ecologically stable and well adapted to local conditions.

The Chief Guest of the conference, Smt. Kanchan Devi, IFS, Director General, Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), Dehradun, in her inaugural address, said that the primary objective of tree improvement efforts should be to develop forest systems that are more resilient, sustainable and aligned with future needs. She emphasized the need to understand the relationship between genotype and environment for genetic improvement, undertake population-level studies of Himalayan species, enhance forest productivity, and bridge the gap between research and extension. She stressed the development and adoption of climate-resilient technologies, implementation of long-term tree breeding programmes, integration of Artificial Intelligence (AI)-based tools in research and forestry, strong partnerships with industries, and effective institutional collaboration. She further emphasized the need for active and effective participation of universities, research institutions, organizations and NGOs to address the various challenges faced by the fragile Himalayan ecosystem. She also stressed the need to increase green cover and enhance ecosystem productivity through programmes such as **CAMPA, *"Ek Ped Maa Ke Naam"* and Mission LiFE**.

During the programme, the Institute released four important publications, including **"Operational Management Plan of Seed Production Area of *Acacia catechu*", "Operational Management Plan of Seed Production Area of *Quercus leucotrichophora*", "Operational Management Plan of Seed Production Area of *Betula utilis*"** and **"हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती"** The publications were released virtually by the Chief Guest, **Smt. Kanchan Devi, Director General, ICFRE, Dehradun**.

The technical deliberations were organized in two sessions. Theme of **Technical Session-I was "Tree Improvement, Genetic Resources and Quality Planting Material for Productivity Enhancement."** The session included presentations and discussions on the research efforts of ICFRE-HFRI, Shimla; Improvement of planting material of forest trees in the Western Himalayas; Advances in tree improvement and genetic resources; Biotechnological and scientific interventions for the improvement, conservation and management of forest genetic resources; and Future prospects of tree improvement. Presentations and discussions on forestry research-related topics by the Forest Departments of Himachal Pradesh and Uttarakhand were also part of the session. **Dr. Mohd. Ibrahim, Scientist-E & Head, GTI, ICFRE-HFRI, Shimla,** delivered a presentation titled "Planting Stock Improvement in the Western Himalayas: HFRI's Initiatives, Experiences, and Future Directions." **Dr. Maneesh Singh Bhandari, Head, GTI, FRI, Dehradun** delivered a presentation titled "Advances in Tree Improvement and Genetic Resources for Sustainable Productivity". **Dr. Rajendra Kumar Meena, Sci-E, GTI, FRI, Dehradun**, delivered a presentation titled "Biotechnological and Physiological Interventions for the Improvement, Conservation and Management of FGRs". **Prof. Sanjay Khajuria, Chief Scientist & Head, KVK Samba**, delivered his talk on "Future Prospects of Tree Improvement for Productivity Enhancement for Viksit Bharat". **Dr. Vinay Bhargava, IFS, CF Research Uttarakhand**, delivered a presentation titled "Climate-Resilient Plantations for Posterity: Issues & Challenges for Uttarakhand". **Sh. Surinder Chandel, DFO, Sundernagar, Himachal Pradesh** delivered a presentation on forestry research.

Technical Session-II was focused on **"Tree Improvement for Climate Adaptation, Agricultural Productivity and Sustainable Livelihoods."** Experts from Forestry, Horticulture and Agricultural Universities and the Industries deliberated on improving the quality and productivity of economically important medicinal trees, genetic improvement of multipurpose trees, clonal forestry, Himalayan genetic diversity for climate-resilient tree improvement, tree improvement in the subtropical regions of Jammu, and agroforestry-based approaches for the rehabilitation of degraded lands. Forestry research-related topics concerning the Forest Department of Jammu & Kashmir were also discussed. **Dr. Kamal Sharma, Retd. Dean, College of Horticulture & Forestry, Neri, Hamirpur**, delivered a presentation titled "Enhancing fruit quality and productivity of economically important medicinal trees in Himachal Pradesh". **Dr. Ashok Kumar Dhakad, Scientist, PAU, Ludhiana,** delivered a presentation titled "Genetic improvement in multipurpose trees for enhancing Farm-Land productivity in North-Western India". **Dr. Sudhir Kumar Sharma, Associate Vice President-commercial, Kuantum Papers Ltd. Hoshiarpur, Punjab**, delivered a presentation titled "Tree improvement through Clonal forestry: A key driver for productivity enhancement and sustainable industrial wood security". **Dr. Jaipal, Head, Department of Tree Improvement and Genetic Resources, UHF Nauni**, delivered a presentation titled "Harnessing Himalayan Genetic Diversity for Climate-Resilient Tree Improvement". **Dr. Puneet Choudhary, Chief Scientist and Head KVK, Jammu, SKUAST Jammu**, delivered a presentation on "Current Status, Challenges and Future Prospects of Tree Improvement for Productivity Enhancement in Jammu Subtropics". **Prof. G. M. Bhatt, Head KVK Kupwara, SKUAST, Srinagar**, spoke on "Agroforestry a viable option for Rehabilitation of degraded Lands: A case study of Western Himalayas".

The conference concluded with a Discussion and presentation of draft recommendation. In the end, **Dr. Ashwani Tapwal,** Group Coordinator (Research), ICFRE-HFRI, Shimla**,** expressed his gratitude to all the dignitaries, participants, experts and members associated with the organization of the conference and proposed a vote of thanks.

Glimpses of Regional Research Conference 2026

<table>
<tr><td> 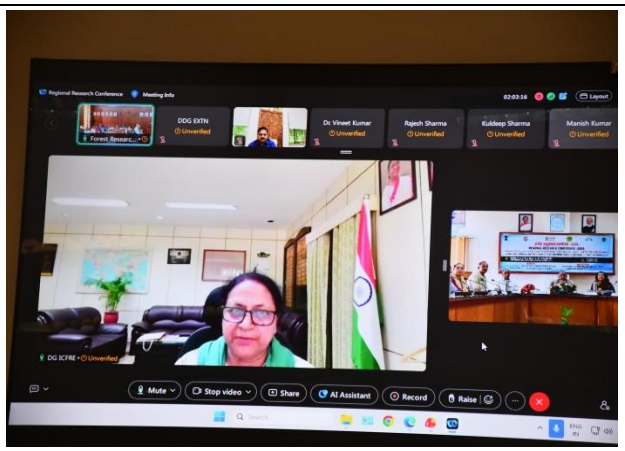 </td><td> </td></tr>
<tr><td>मुख्य अतिथि द्वारा संबोधन</td><td>विशिष्ठ अतिथि द्वारा संबोधन</td></tr>
<tr><td> </td><td> </td></tr>
<tr><td>निदेशक हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा संबोधन</td><td>प्रकाशनों की विमोचन</td></tr>
<tr><td> 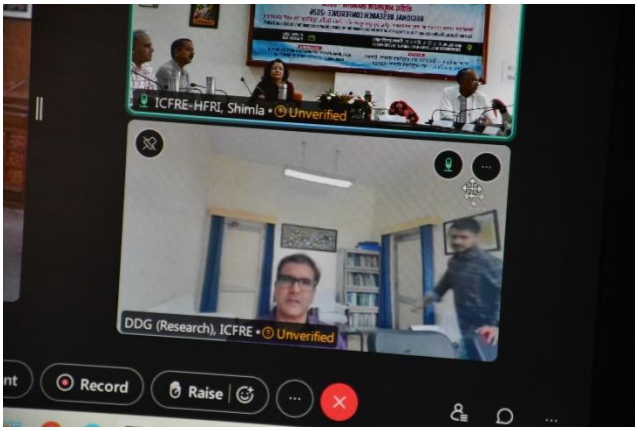 </td><td> 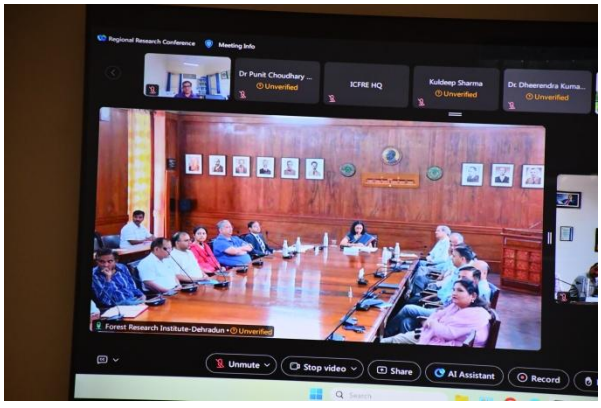 </td></tr>
<tr><td>उप महानिदेशक (अनुसंधान), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा संबोधन</td><td>निदेशक व.अ.सं., देहरादून द्वारा संबोधन</td></tr>
</table>

समूह समन्वयक (अनुसंधान), हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा संबोधन

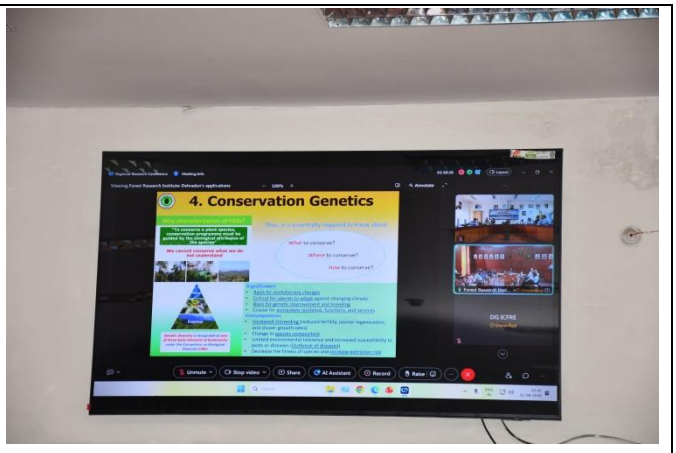

सम्मेलन की प्रस्तुतियाँ

सम्मेलन के प्रतिभागी व विशेषज्ञ

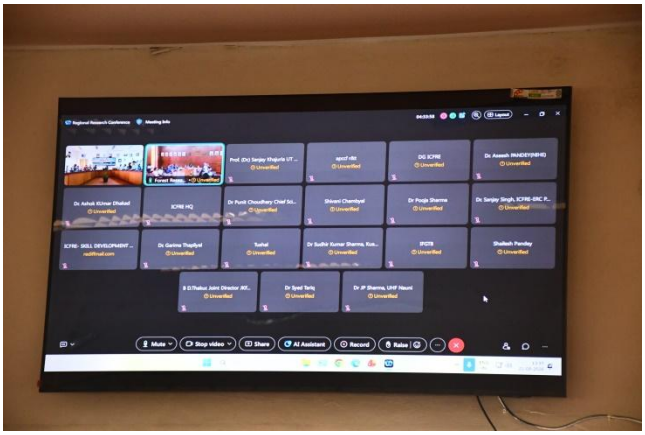

सम्मेलन के प्रतिभागी व विशेषज्ञ

सम्मेलन के प्रतिभागी

****